स्मरणात्मक बिन्दु या सारांश (Summary) (1)

(विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन)

(1) ज्ञान व्यक्ति के मस्तिष्क में विद्यमान है व्यक्ति स्वयं सीखता है शिक्षक एक मित्र तथा पथ प्रदर्शक है। उसे प्रेम-पूर्वक बच्चे को सहायता करनी चाहिए।

(2) केवल पुस्तकीय ज्ञान शिक्षा नहीं वरन शिक्षा ऐसी हो जिससे चरित्र का गठन हो, बुद्धि का विकास हो, व्यक्ति निर्भय एवं आत्मनिर्भर बने।

(3) धार्मिक शिक्षा पुस्तकों के माध्यम से नहीं वरन् व्यवहार, आचरण तथा संस्कारों के माध्यम से दी जानी चाहिए।

(4) शिक्षा, मन, वचन तथा कर्म की शुद्धि एवं आत्म नियन्त्रण है।

(5) जन साधारण को शिक्षित किया जाय ताकि सबका विकास हो सके।

(6) शिक्षक एवं छात्रों का सम्बन्ध निकट का हो। गुरु एवं शिष्य का हो।

(7) शिक्षा के लिए एकाग्रता को आवश्यक माना।

(8) शिक्षा ऐसी हो जिसके द्वारा बालक का शारीरिक मानसिक बौद्धिक, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, आध्यात्मिक चारित्रिक, नागरिक ~~गुण~~ व्यावसायिक विकास हो।

(9) राष्ट्रीय और मानवीय शिक्षा घर से प्रारम्भ होनी चाहिए जहाँ बच्चे अपने परिवार से प्रेम करना सीखें और बाद में समाज का सदस्य बनकर अपने छोटे से प्रेम को विश्व प्रेम में बदल दें।

(10) विश्व का असीम ज्ञान का भण्डार स्वयं तुम्हारे मन में है। मनुष्य जो कुछ सीखता है, वह वास्तव में 'आविष्कार करना' ही है। आविष्कार का अर्थ— मनुष्य का अपनी अनन्त ज्ञानस्वरूप आत्मा के ऊपर से आवरण को हटा लेना है।

(11) किसी की सेवा पूजा भाव से करो यह मानकर (2) करो कि वह तुम्हे अवसर दिया है उस ब्रह्म रूपी जीव का सेवा करने का।

(12) शिक्षा वह है जो भूत दया उत्पन्न करे अर्थात् सभी पदार्थों पर दया करे।

(13) स्वामी जी चाहते थे कि, कि मनुष्य बनाने वाली शिक्षा दी जाय।

(14) 90% विचारशक्ति को साधारण मनुष्य व्यर्थ खो देता है और इसी कारण वह सदा बड़ी-बड़ी भूलें किया करता है।

(15) एकाग्रता की शक्ति ही ज्ञान की खजाने की एक मात्र कुंजी है।

(16) मनुष्य जैसा सोचता है, वह वैसा ही बन जाता है।

(17) सम्पूर्ण शिक्षा तथा समस्त उपदेशों का एकमेव उद्देश्य है इस व्यक्तित्व को गढ़ना।

(18) धार्मिक गुरु वही हो सकता है जो (1) शास्त्रों के मर्म को जानें, (2) निष्पाप हो (3) जो धन, नाम, यश के लिए शिक्षा न दे। यह वर्तमान शिक्षक पर भी लागू है।

(19) धर्मान्धता एक रोग है, प्रत्येक धर्म अपने सिद्धान्तों को सामने रखता है और इस पर जोर देता है कि केवल वे ही सत्य हैं। कोई-कोई तो अपने धर्ममतों को जबरदस्ती मनवाने के लिए तलवार तक खींच लेते हैं। (सन्दर्भ- शिक्षा, विवेकानन्द पृ० - 39)

(20) मैं ईश्वर की पूजा हर धर्म के अनुसार करना चाहता हूँ। विवेकानन्द

(21) दुनिया तभी अच्छी और पवित्र हो सकती है जब हम स्वयं पवित्र और अच्छे हों।

(22) शिक्षित, धार्मिक, पवित्र, सच्चरित्रवती माताओं के घर में ही महापुरुष जन्म लेते हैं।

(23) वेदान्त की शिक्षा तथा सेवा, शिक्षा को प्रत्येक हृदय पर लागू करने की बात कही। वेदान्त शिक्षा का अर्थ है कि हम ब्रह्म व ईश्वर हैं। अतः हर जगह ईश्वर है।

③

(24) शिक्षा मातृभाषा द्वारा दो।

(25) दरिद्र को नारायण मानकर उनकी सेवा करो।

(26) जनसाधारण में शिक्षा का प्रचार करना चाहिए, क्योंकि राष्ट्र की प्रगति उसी अनुपात में होती है, जिसमें जनसाधारण को शिक्षा मिलती है।

(27) शिक्षक को बालक के प्रति असीम प्रेम, अनन्त धैर्य और वास्तविक सहानुभूति रखनी चाहिए।

(28) स्वामी जी ने उन सभी विषयों के अध्ययन पर बल दिया जो मनुष्य के भौतिक (लौकिक) समृद्धि तथा आध्यात्मिक पूर्णता के लिए आवश्यक है।

(29) स्वामी जी शिक्षा को मनोवैज्ञानिक पद्धति से देना चाहते थे उन्होंने कहा था "हमें वैसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं है जो गधे को पीटकर घोड़ा बनाना चाहती है।"

(30) उन्होंने अपनी शिक्षण विधियों में आधुनिक एवं प्राचीन दोनों प्रकार के विधियों को सम्मिलित किया।

(31) स्वामी जी का कहना था कि भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान के लिए ब्रह्मचर्य पालन आवश्यक है अर्थात इन्द्रिय निग्रह आवश्यक है।

(32) गुरु शिष्य सम्बन्ध में प्रेम, सहानुभूति एवं दिव्यता होनी चाहिए।

(33) स्वामी जी का अनुशासन के बारे में विचार था कि अनुशासन प्रभावात्मक एवं आत्मानुशासन दोनों होना चाहिए। प्रभावात्मक का अर्थ यह है कि शिक्षक का ऐसा प्रभाव होना चाहिए कि छात्र स्वयं शिक्षक के प्रभाव के कारण अनुशासित रहें। आत्मानुशासन का अर्थ यह है कि छात्र या शिष्य आत्मा द्वारा अनुशासित रहें तथा आत्मनियन्त्रण रखें। स्वामी जी कहते थे कि जो प्राकृतिक रूप से अनुशासित है वह अनुशासित नहीं है और जो सामाजिक रूप से अनुशासित है वह कुछ अनुशासित है तथा जो आध्यात्मिक रूप से अनुशासित है वही सही रूप से अनुशासित है।

(34) स्वामी जी यह मानते थे कि विद्यालयों का पर्यावरण शुद्ध हो जहाँ भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की शिक्षा दिया जाता हो दूसरे शब्दों में जहाँ खेल-कूद, योग-व्यायाम, भजन कीर्तन तथा सेवा का कार्य भी कराया जाता हो। वैसे स्वामी जी गुरुकुल प्रणाली के गुणों से प्रभावित थे

(4)

स्वामी जी के विचारों में राष्ट्रीय शिक्षा की आत्यधिक झलक मिलती है। उन्होंने कहा था कि किसी भी राष्ट्र को अपने नागरिकों के लिए उचित शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। वह शिक्षा विश्व में जहाँ से भी मिले जो हमारे नागरिकों के लिए कल्याणकारी हो उसे देने का काम करना चाहिए।

(36) स्वामी जी द्वारा रामकृष्ण मिशन की स्थापना किया गया, जिसका उद्देश्य था 'आत्मनः मोक्षार्थाय जगत हिताय च' अर्थात अपने मोक्ष के लिए तथा जगत के हित के लिए काम करना। रामकृष्ण मिशन का शाखा भारत ही नहीं अनेक देशों में भी है।

(37) स्वामी जी के सन्दर्भ में पं० जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि, " भारत के अतीत में सरल आस्था रखते हुए और भारत के विरासत पर गर्व करते हुए भी स्वामी जी का जीवन की समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण आधुनिक था और वे भारत के अतीत एवं वर्तमान के बीच बड़े संयोजक थे।"

(Rooted in the past and full of pride in India's heritage, Vivekanand was yet modern in his approach to life's problems and was a kind of bridge between the past of India and her present.)

—Pt. Jwahar Lal Nehru

(~~नोट— दूसरे तीसरे PDF में विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन एवं निष्कर्ष भेजा जायेगा।~~

(38) विवेकानन्द सह-शिक्षा के विरोधी थे जो आत्म संयम में बाधक है तथा स्त्री एवं पुरूषों की पाठ्यचर्या हर जगह समान नहीं है। पर स्त्री व पुरूष को समान शिक्षा देने के पक्ष में थे।

(39) स्वामी जी के हृदय में दलित, पिछड़ों एवं स्त्रियों के दयनीय दशा को सुधारने के लिए अत्यन्तम अकुलाहट थी। जिसको ठीक करने के लिए शिक्षा उपयोगी उपाय साबित होगी।

(40) स्वामी जी अपने देश के गरीबी का नंगी तस्वीर देखी थी तथा पाश्चात्य देशों का अमीरी एवं वैभव भी देखा था। उक्त देशों का वैभव का कारण — जन शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा, तकनीकी शिक्षा और औद्योगिक शिक्षा को बताया।